R.S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

मनुष्य बनो

वर्ष २८	मार्गशीर्ष सं० २०३४ वि० जनवरी, १९७८	संख्या ४

"मनुष्य बनो" पत्रिका के पाठकों, इष्ट मित्रों व शुभ चिन्तकों को नव वर्ष मंगलमय हो।

व्यवस्थापक

सम्पादक

श्री मोरार जी भाई देसाई,
प्रधान मंत्री,
नई दिल्ली ।

आदरणीय प्रधान मंत्री महोदय,
सादर प्रणाम

आन्ध्र प्रदेश में हाल ही में घटी विनाश लीला में पीड़ित भारतीय जनता के सहायतार्थ "प्रधान मंत्री राहत कोष" में इस संस्था के निम्न सदस्यों ने अपना सदभाव प्रकट करते हुए कुछ योगदान प्रदान किया है। जिसके निवित्त ११६) रु० का बैंक ड्राफ्ट प्रेषित कर रहा हूँ :-

क्रम सं०	नाम व पता	धनराशि
१.	सर्व श्री छोटेलाल जी, जंगीगंज, वाराणसी ।	५१-००
२.	,, आत्मा नन्द शास्त्री, राधास्वामी धाम ,,	१०-००
३.	,, भोलानाथ मौर्य ,, ,,	६-००
४.	,, पारसनाथ मौर्य, जंगीगंज, ,,	५-००
५.	,, मेवालाल जयसवाल ,, ,,	५-००
६.	,, राम राज मौर्य, राधास्वामी ,,	५-००
७.	,, शीतल प्रसाद, विशुनदेवपुर ,,	५-००
८.	,, बंगाली, विशुनदेवपुर ,,	४-००
९.	,, राम चन्द्र, ,, ,,	५-००
१०.	,, राम लीलारथ, राधास्वामी धाम ,,	५-००
११.	,, जोजई लाल ,, ,,	५-००
१२.	,, माधोलाल, जंगीगंज ,,	५-००
१३.	हुबलाल, विशुनदेवपुर ,,	५-००

नत्थी :- (संलग्नक)
बैंक ड्राफ्ट नं० ओन्टो/ए-ई-६६४९९९ दिनाँक १७-१२-१९७७ ई०
रुपया ११६/-
प्रतिलिपि :-

प्रतिलिपि सूचनार्थ एवं प्रकाशनार्थ आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित :-

१—सम्पादक जनवार्ता, वाराणसी ।
२—सम्पादक, मनुष्य बनो, अलीगढ़ ।
३—सम्पादक, मानव मन्दिर, एवं जनता जनार्दन । होशियारपुर, पंजाब ।
४—दयाल, आन्ध्र प्रदेश ।

आपके सम्मानित पत्रिका के माध्यम से समस्त भारत के सत्संगी भाइयों से अपील करता हूं कि वे मानवता के आधार पर आन्ध्र प्रदेश को (विनाश लीला) तूफान पीड़ितों के सहायतार्थ प्रधान मंत्री राहत कोष नई दिल्ली में अपना अमूल्य योगदान दें ।

सधन्यवाद ।

भवदीय
आत्मानन्द शास्त्री
सेक्रेटरी/मैनेजर
राधास्वामी जनरल सतसंग ट्रस्ट
पत्रालय—राधास्वामी धाम
वाराणसी (उ० प्र०)

प्रिय पाठक गण,

दयाल मानवता प्रचारक सभा राजेन्द्र नगर नई दिल्ली ने दशहरे के शुभ अवसर पर दिल्ली के एक सतसग भवन के निर्माण कार्य का आवाहन किया है। जिसमें परम पूज्य परम दयाल महाराज जी ने हुजूर महाराज पीरे मुंगा साहब जी ने तथा परम सन्त ताराचन्द जी, तथा आनन्द राव जी हैदराबाद वालों ने दान देकर इस कार्य में अपना अमूल्य योगदान दिया है।

आप सभी सतसंगियों, शुभ चिन्तकों तथा इष्ट मित्रों से निवेदन है कि इस कोष में यथोचित दान देकर इस कार्य को पूरा कराने में अपना सहयोग प्रदान करें।

दान चैक द्वारा दयाल मानवता प्रचारक सभा राजेन्द्र नगर नई दिल्ली पते पर भेजा जा सकता है।

हम सभी के आभारी होंगे जो इस पुनीत् कार्य में अपना योगदान देंगे।

भवदीय :
नन्दलाल उर्फ आनन्द दयाल
मंत्री

—०—

दयाल मानवता प्रचारक सभा दिल्ली ने तूफान से पीड़ित क्षेत्र की सहायतार्थ १००१) रु० का दान श्री आनन्दराव हैदराबाद सतसंग सभा को भेजा है और उनको इस राशि को पीड़ित परिवार की सहायतार्थ वितरण करने का अधिकार दिया है जो भी सज्जन इसमें और दान देना चाहें वह "दयाल मानवता प्रचारक सभा" को चैक द्वारा अथवा नगद राशि में दे सकते हैं।

भवदीय :
नन्दलाल उर्फ आनन्द दयाल
मंत्री

कबीर साहिब का बीजक

(महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज)

कबीर साहिब के मुख्य ग्रंथ का नाम बीजक है। "बीजक" हिन्दी शब्द है। इसको कुञ्जी भी कहते हैं परन्तु 'बीजक' उस कुँजी को नहीं कहते जिसमें साधारण ताले खोले जाते हैं किन्तु 'बीजक' नाम है उस पत्र (कागज) का जिसमें किसी गड़े हुए खजाने या गुप्त धन का भेद संकेत, संक्षेप शब्दों या चित्रों में होता है। जिसको 'बीजक' मिल जावे वह सुगमता से गड़े हुए धन का पता पा सकता है। हम जहाँ रहते हैं उसका नाम भदोही है। यह स्थान राज बनारस में है। शुद्ध शब्द 'भरोंही' था। अब बिगड़ कर 'भदोही' बन गया। 'भरोंही' नाम पड़ने का कारण यह है कि वहाँ किसी समय में भर जाति के लोग राज्य करते थे। भर उसी जाति के लोग हैं जिनको वर्त्तमान काल के इतिहास लिखने वाले भारत-वर्ष का प्राचीन बासी बतलाते हैं। भरों के राज्य नष्ट होने के पश्चात वहाँ के राजा 'मौनस' ठाकुर हुये। तत्पश्चात धीरे धीरे समय के परिवर्त्तन से यह भूमि काशी नरेश के राज्य में आगई। भरों का राज जाता रहा परन्तु उस जाति के लोग जो राजवंश से हैं अब तक जगह जगह पाये जाते हैं। इनकी दशा शोचनीय है। यह प्रायः कङ्गाल और निर्धन होते हैं और भदोही में खेती का काम करके जीवन व्यतीत करते हैं। वह पढ़े लिखे नहीं होते केवल थोड़ी बहुत कँथी जानते हैं। उनमें से कुछ लोगों के पास उन खजानों के बीजक हैं जो भरों ने अपने कोट (किलों) में गाड़ दिये थे। जब उन पर आपत्ति आती है और रुपये की कमी होती है तो भेष बदल कर उन विशेष स्थानों में भ्रमण करते हैं जहाँ खजाने गढ़े हैं और अवसर पाकर उन स्थानों को खोदकर रुपये लेजाते हैं। हमारे देखते देखते कई स्थान इन लोगों ने खोद डाले और रुपया उठा ले गये। कोई कोई पुराने सिक्के वहाँ मिट्टी में मिले हुए लोगों

के हाथ लगे जिनसे पता चला कि भरों ने इसको खोदा था। भर अपने 'बीजक' न अन्य जाति को दिखाते हैं न किसी से सम्मति लेते हैं। केवल अपनी सन्तान को उनका भेद देते हैं। गाढ़े समय में वह इनसे लाभ उठाते हैं। दूसरे लोग इन बीअकों को समझ भी नहीं सकते एक तो 'बीजक' का यह रूप है।

दूसरे व्यापारी और सौदागर अपने माल की सूची को 'बीजक' कहते हैं। जब किसी अन्य स्थान से माल रेल या जहाज पर आता है तो इसके साथ यह बीजक भी भेजा जाता है जिससे माल के सँभालने और जाँच पड़ताल करने में सहायता मिलती है। व्यापारियों में यह शब्द बहुत ही प्रचलित और प्रसिद्ध है।

तीसरे 'बीजक' का अर्थ है—'बीज' 'निचोड़', 'सार' अर्थात उसमें प्रत्येक वस्तु को व्याख्या इतनी सूक्ष्म और संक्षेप रीति से रहती है कि साधारण मनुष्य उसका पता नहीं पा सकते केवल सूक्ष्म वेत्ता और तीव्र बुद्धि ही सार को समझते हैं। यही उनकी पूर्ण व्याख्या कर सकते हैं।

कबीर साहिब के जिस ग्रंथ का नाम 'बीजक' है उसमें यह तीनों बातें पाई जाती हैं। एक तो वह परमार्थ के खजाने और आत्म ज्ञान के भण्डार की कुंजी है दूसरे उसमें उन सब विषयों की सूची है जिसकी शिक्षा परमार्थियों को दी जाती है और जिनका जानना अति आवश्यक है। तीसरे इन सब बातों को बीज रूप में वर्णन किया गया है।

सब से पहिले कबीर साहिब ने इस ग्रंथ को रचकर भगूजी अपने चेले को सुनाया था और वही उसके एकत्रित करने वाले भी प्रसिद्ध हैं। भग्गूजी का नाम भगवानदास भी है। जिस समय बीजक की रमैनी और शब्द एकत्रित किये गये थे वह उसे लेकर धनौती में चले आये। इतिहास से कुछ पता नहीं चलता कि वह उसे क्यों और

किस संयोग के कारण लेकर धनौती में चले आये। चिरकाल तक यह ग्रन्थ धनौती के महन्तों के पास रहा। तत्पश्चात वहाँ से उस का प्रचार विचित्र रूप से हुआ क्योंकि प्रचार होना तो आवश्यक था।

'सन्त वचन पलटे नहीं, पलट जाय ब्रह्मण्ड'

यह भी कहा जाता है कि जग्गूदास और भग्गूदास कबीर साहब के दो चेले सगे भाई थे। जब कबीर साहिब के गुप्त होने का समय आया इन दोनों ने हाथ बाँध कर प्रार्थना की कि 'कोई ऐसी वाणी हमको प्रदान की जाये जिसका हम नित्य पाठ करते रहें और उसके स्वाध्याय से हमको सार भेद का स्मरण होता रहे।' कबीर साहिब ने यह प्रार्थना स्वीकार करली और उनको यही 'बीज'क लिखा दी। कबीर साहिब की वाणी अनगिनत हैं परन्तु 'बीजक' के अतिरिक्त' और कोई वाणी ग्रन्थ बद्ध नहीं हुई थी। कबीर साहिब के पश्चात दोनों चेले उसका प्रचार करना चाहते थे तब उनकी माता ने बीजक की दो प्रतियाँ लिखाई। एक में पहिली रमैनी इस प्रकार 'अन्तर ज्योति शब्द यक नारी' और दूसरी में 'पहिली रमैनी इस भाँति आती है—'जीव रूप यक अन्तर वासा।' परन्तु यह दन्त कथा ही है जो मानने योग्य नहीं है। रीवाँ के राज-कुल को इस बात का घमण्ड है कि यह 'बीजक' कबीर साहिब ने उनके पूर्वज को प्रदान किया था। चाहे कुछ हो 'बीजक' विद्यमान है और चाहे वह किसी को मिला हो अब वह सारे संसार की जायदाद है।

परन्तु यह पता नहीं लगता कि कब यह ग्रन्थ गुरुमुख धर्म्मदास जी साहिब के पास पहुंचा और इसका पता लगाना भी अनावश्यक है। हमारे लिये इतना ही बहुत हैं कि कबीर साहिब के बीजक का सर्व साधारण में प्रचार होगया वरन् यह अपूर्व ग्रन्थ सम्भव था कि धनौती के महन्त ही के पास रहता और दूसरे उससे लाभ न

उठा सकते।

'बीजक' पहिले कैथी अक्षरों में लिखा गया था। कैथी वह अक्षर है जो पहिले कचहरियों में प्रचलित थे और सर्व साधारण उन्हीं के द्वारा लिखने पढ़ने का व्यवहार करते थे। उस समय पढ़ने लिखने का काम अधिकतर कायस्थों ही के हाथों में था इसलिये इन अक्षरों का नाम कैथी पड़ गया। बिहार और संयुक्तप्रान्त के पूर्वी जिलों में भाषा की सारी पुस्तकें इन्हीं अक्षरों में लिखी जाती थी और पुरानी पुस्तकें भी सब कैथी में मिलती हैं। यहाँ तक कि गोस्वामी तुलसीदासजी की असली रामायण भी पहिले इन्हीं अक्षरों में लिखी गई थी।

'बीजक' की भाषा ठेठ पूर्वी है जो बनारस, मिर्जापुर और गोरखपुर आदि जिलों में बोली जाती है। कबीर साहिब के अनगिनत शब्द ब्रज भाषा में भी मिलते है परन्तु 'बीजक' में यह विशेषता है कि वह ठेठ पूर्वी भाषा है जिसके बहुत से शब्दों को सर्व साधारण हिन्दी जानने वाले भी नहीं समझ सकते।

पूर्व की बोली सर्व प्रिय नहीं कही जाती फिर भी हिन्दी की सब से अधिक पुस्तकें पूर्व ही की बोली में लिखी गई है आज कल की तरह उस समय भी पूर्व की बोली पर हँसी उड़ाई जाती रही होगी। पूर्व वाले अब भी बात चीत में स्त्री लिंग और पुलिङ्ग का ध्यान नहीं रखते। फिर भी कबीर साहिब को पुरबिया होने का अभिमान था। एक जगह आप लिखते हैं—

हम पूरब के बासी सन्तो! हमरी लखे न कोय।
हमरी बातें वह लखे, जो खरा पुरबिया होय॥

जहाँ कबीर साहिब की वाणी गूढ़ है वहां पूर्वी शब्द उसको और भी कलिष्ट बना देते हैं परन्तु यह ध्यान रखना चाहिये कि आत्म ज्ञान के शिक्षक सदैव से सर्व साधारण की भाषा ही में बात चीत करते रहे हैं। कहीं और कभी भी साहित्य के बन्धन में नहीं फँसे।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

भारतवर्ष में तो हर जगह सन्तों और साधुओं ने इसी नियम का लक्ष्य रक्खा है अन्य देशों में भी इसी नियम का पालन होता रहा है।

शताब्दियों तक बीजक का प्रचार लिख लिख कर केवल कबीर पंथियों के मठों में होता रहा। एक तो सर्व साधारण के हाथों तक इसका पहुंचना कठिन था। और यदि किसी ने परिश्रम करके लिखा भी तो बहुत कम प्रतियाँ ऐसी मिलती थीं जो सर्वाङ्ग से पूर्ण होती थीं। धनौती, धर्म्मदास जी के मठ, और महाराज रीवाँ के पुस्तकालय की प्रतियां पूर्ण थीं। रीवाँ का राजवंश पहिले ही से कबीर पंथी था क्योंकि वह कबीर साहिब ही का वंश कहलाता है और निर्वंश होने पर व्याघ्रदेव नामक इस राज घराने का पूर्वज कबीर साहिब ही की आशीर्वाद से उत्पन्न हुआ था। इसलिये आवश्यक था कि वह उनका श्रद्धालु होता। कहा जाता है कि इस घराने में जो 'बीजक' की लिखी हुई प्रति है वह सम्वत १५२१ विक्रमी की और धर्म्मदासजी के हाथ की लिखी हुई है।

फिर जब छापेखाने का रिवाज हुआ बनारस में पहिली बार सन १८६८ ई० में उसके कुछ भाग छापे गये जिनमें सारे शब्द नहीं थे और उसमें महाराजा विश्वनाथसिंह रीवां नरेश वाली टीका भी थी जिनको किसी दन्त कथा के अनुसार कबीर साहिब का अंश माना गया है।

दूसरी बार सन् १८९० ई० में मुंगेर के पादरी प्रेमचन्दजी ने बीजक का छोटा सा सुन्दर गुटका कलकत्ते में छपवाया। हमको यह पुस्तक बहुत अच्छी लगी। हमने साधारण रीति से इस पुस्तक को पढ़ा था। प्रेमचण्दजी ने अपनी जान में बहुत ही शुद्ध छपवाया था फिर भी कुछ कुछ अशुद्धि रह गई और विषयों में भी कुछ विशेष त्रुटि है परन्तु बहुम कम।

तीसरी बार 'बीजक' को मुन्शी नवलकिशोर साहिब ने अपने लखनऊ के प्रेस में सन १८९८ ई० में छापा। वह कबीर पंथियों के विचार में शुद्ध और पूर्ण है। यह सटीक भी है। टीका वही रीवां नरेश वाली है।

बुरहानपूर के पूरनदासजी कबीर पंथी ने अपनी अलग टीका बीजक पर लिखी थी जो इलाहाबाद में सन १९०५ ई० में छपी। उन्होंने इस में जगह जगह संशोधन भी किया है।

सन १९०६ ई० में वेङ्कटेश्वर प्रेस बम्बई ने स्वामी युगलानन्द-जी की आज्ञानुसार सटीक बीजक छापा जो नवलकिशोर प्रेस के यडिसन (Edition) के अनुसार है। इसमें बहुतसी व्यर्थ बातें बढ़ाई गई हैं जिनकी कुछ भी आयश्यकता नहीं थी। विशेष कर बघेलवंश के इतिहास को इसमें बढ़ाने की आवश्यकता नहीं थी। हाँ इस यडिशन में मूल रमैनी का बढ़ाना बहुत ही प्रशंसनीय है जो कबीर पंथियों में अब तक गुप्तरीति से चली आती थी और जिसका ज्ञान दूसरों को नहीं था। मूल बीजक से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है परन्तु यह वह वस्तु है जिसमें कबीर साहिब की शिक्षा का सार और तत्व सुरक्षित है। बीजक के समझने में उसकी सहायता से बड़ी सुगमता होती है। यदि कोई मनुष्य इस मूल रमैनी को भली भाँति समझ ले जिसका नाम अक्षर खण्ड की रमैनी भी है तो उसको बीजक के समझने में विशेष कठिनाई न होगी। स्वामी युगलानन्दजी जून सन् १९१३ ई० में हम से मिलने के लिये दिल्ली पधारे थे। बात चीत में यह भी पता लगा कि मूल रमैनी के छपाने पर किसी महन्त साहब ने उन पर नालिश भी की थी क्योंकि इसका छापना उनके विचारानुसार महा पाप था। जो कुछ हो इस प्रकार उसका छप जाना अच्छा ही हुआ क्योंकि वह कबीर साहिब की शिक्षा का मूल तत्व है और बहुत से भ्रमों को दूर करती है जो और किसी प्रकार बीजक की सहायता से भी असम्भव था। कारण

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

यह है कि बीजक की टीका जो महाराजा विश्वनाथसिंह ने की बहुत ही अशुद्ध है और कबीर साहिब के सिद्धान्त से भटका देता है। सर्व साधारण का तो यह विचार है कि कबीर साहिब ने यह टीका उन्हें स्वयं लिखाई थी परन्तु हम नहीं कह सकते कि इस टीका के रहते हुए कैसे इस विचार को सच माना जा सकता है!

'बीजक' का अन्तिम यडिशन पादरी अहमद शाह साहिब ने कानपुर के 'ला प्रेस' में छपवाया है। यह निस्सन्देह इन सब से उत्तम है। इसमें टीका नहीं है परन्तु पुस्तक औरों से अच्छी छपी है। अशुद्धियाँ भी बहुत ही कम हैं। इसके प्रकाशित करने में पादरी साहिब को बहुत ही परिश्रम करना पड़ा है। वह कई वर्ष तक 'बीजक' के अनुवाद करने के लिये प्रयत्न करते रहे। उनको कोई योग्य पंडित नहीं मिला जो उत्तम रीति से बीजक की टीका कर सकता। अन्त में उन्होंने हमको लिखा और बहुत दिनों तक हमारे पास स्वाध्याय करने के अनन्तर इसको हिन्दी में छपाया।

पादरी साहिब ने भी हमसे उसका टीका उर्दू में करने के लिये प्रार्थना की थी। परन्तु एक तो हमें छुट्टी नहीं थी दूसरे अमरीका आदि देशों में भ्रमण करने का विचार था। हमको इस कठिन काम को हाथ में लेने से संकोच था। पादरी साहिब तो हमीरपुर चले गये। मु० सूरज नारायण साहिब मिह इसकी टीका लिखने के लिये बहुत ही हट करने लगे। यहां तक कि अमरीका से लौट आने पर बार बार वही प्रार्थना करने लगे। फिर हमने भी ठान लिया कि लगे हाथों अधिकारियों के लाभार्थ इसकी टीका उर्दू में लिख डालें। मालिक की दया से सन १९१४ ई० में उर्दू की टीका लिख कर प्रकाशित हो गई जो पक्षपात रहित होने के कारण थोड़े ही दिनों में सर्व प्रिय होगई। उसके लिखने में हमने और टीकाओं से सहायता नहीं ली जो कुछ हमारे अपने अनुभव में आया वही वर्णन किया है

और सार तत्व को कबीर साहिब ही के शब्दों से निकालने का यत्न किया है। पहिले मूल शब्द है फिर कठिन शब्दों का शब्दार्थ है। तत्पश्चात उल्था के साथ साथ व्याख्या, टीका और भावार्थ भी है।

हिन्दी के प्रेमियों का यह उलहना था कि उन्हें उर्दू के बीजक से ज्यों का त्यों लाभ उठाने में बड़ी कठिनाई होती है। इसलिये उनके बहुत आग्रह करने पर अब संत के सिलसिले में हिन्दी भाषा की टीका भेंट की जाती है। यह 'बीजक' का प्रथम भाग है जिसमें रमैनी की टीका उत्तम रीति से शब्दार्थ, उल्था, व्याख्या और भावार्थ के साथ कीगई है। शेष भाग संत के आगामी नम्बरों में भेंट होंगे।

हमको न पक्षपात है न हठधर्मी है इसलिये आशा की जाती है कि यह भी सर्व प्रिय होगी। न केवल कबीर पंथी ही इसको सहायता से समझेंगे किन्तु जो लोग कबीर पन्थी नहीं हैं उनको भी कबीर साहिब की शिक्षा का अपूर्व रस और आनन्द मिलेगा।

बीजक के सिद्धान्त पर साधारण विचार

(१) तीन बातें मुख्य हैं— (१) सत्गुरु (२) सत्नाम और (३) सतसङ्ग। सच्चे जिज्ञासु को इन तीनों से सम्बन्ध रखना अति आवश्यक है।

सतगुरु

ऐ मरजीवा ! अमृत पीवा ! का धँसि मरसि पताल।
गुरु की दया साध की संगत, निकल आओ यहि काल ॥
कड़े ते गये वड़ोपना, रोम रोम हङ्कार।
[illegible] गुरु के परिचय विना; चरों वरन चमार ॥

परन्तु सच्चा गुरु हो तब काम बनता।

दोहा

जाका गुरु है आँधरा, चेला कहा कराय।
अन्धे अन्धा ठेलिया, दोऊ कूप पराय॥

सत्तनाम

राम नाम अहै निज सार। औ सब झूठ सकल संसार॥
सुमिरन करहु सो राम को, काल गहे है केस।
ना जानूँ कब मारि है, क्या घर क्या परदेस॥

परन्तु यह ध्यान रहे राम नाम से आशय अवतार वाले राम से नहीं है केवल धुन आत्मिक नाम से है जिसकी ध्वनि घट में हो रही है। सुनो कबीर साहिब की वाणी है—

सो जानै जेहि मैं हि जनाऊँ। बाहँ पकड़ि लोकैं ले आऊँ।
सहज जाप धुनि आपे होई। यह संधि बूझे बिरला कोई॥
रग रग बोलै राम जी, रोम रोम राकार।
सहजे धुनि लागी रहै, सोई सुमिरन सार॥
होंठ कण्ठ हालै नहीं, जिम्या नहीं उचार।
गुप्त वस्तु को जो लखै, सोई हंस हमार॥

सत्तसङ्ग

मालिक का निज स्थान वह है जहाँ उसके प्यारे भक्त रहते हैं।

मन मेरा पंछी भया, उड़ कर चला अकास।
स्वर्ग लोग खाली पड़ा, साहिब संतन पास।

(२) ज्ञान आवश्यक है। वाचक ज्ञान व्यर्थ और निरर्थक है।

कहता तो बहुते मिले, गहता मिला ना कोय।
सो कहता वह जान दे, जी नहि गहता होय॥

(३) केवल एक से सम्बन्ध रखना अद्वैत और एकत्व है, शेष द्वैत हैं।

एक एक के निहआरे, तौ निहआरी जाय।
दोई मुख के बोलना, घना तमाँचा खाय।।
मूल गहे ते काम है, तू मत भर्म भुलाय।
मन सायर सम्मुद्र है, वही कभू मत जाय।।
एकै से सब होत हैं, डाल पात फल फूल।
अब लेने को क्या रहा, गह पकड़ा जब मूल।।

(४) इन्द्री दमन, सहन शीलता और मन की गढ़त संत मत की पहिली सीड़ी है।

जाके जिह्वा बन्धन नाहीं, हृदया नाहीं सांच।
वाके संग न लागिये, घालैं हीरा काँच।।

(५) ज्ञानियों का वाचक ज्ञान त्यागने योग्य और साधू और अभ्यासियों की रहनी ग्रहण करने योग्य है।

ज्ञानी मूल गँवाइया, आप भये करतार।
याते संसारी भला, जो सदा रहे डरता।।
मो में इतनी शक्ति कहाँ, गाऊँ गला पसार।
बन्दे को इतनी घनी, पड़ा रहै दरबार।।

(६) मानुषी शरीर ही विशेषता के साथ स्वाध्याय योग है। जो इसके भाव और विचार का ज्ञान प्राप्त करके उन पर अधिकार पा लेता है यह परमार्थ का अधिकारी होता है।

शब्द हमारा आदि का, पल पल करहू याद।
अन्त फलेगी माँहि की, बाहिर की सब बाद।।

(७) अपना अनुभव ही सच्चा राह बतलाने वाला है यदि गुरु भक्ति के साथ हो।

अनुभव कथी कबीर ने, अनुभव वोलें हंस।
बिन अनुभव कथनी कथे, बूड़ि जात है वंस।।

(८) अपनी श्रद्धा पर अटल और दृढ़ रहो। उस समय औरों का सुनना हानिकारक नहीं होता परन्तु दृष्टि सदा सार और

तत्व पर रहे।

सुनिये सब की निवेरिये अपनी ।
सेंदुर का सिंधोरा, झपनी की झपनी ।।

(६) वाचक एकत्व वाद का शब्द जिह्वा पर न आये इससे मन की अन्तरी शक्ति चली जाती है। काम कहने से नहीं किन्तु समझने से है।

गावे कथे विचारे नाहीं, अनजाने का दोहा।
कहैं कबीर पारस परसे बिना, पाहन परसे लोहा ।।
इत्यादि इत्यादि इत्यादि.

बीजक पढ़ने के तीन संकेत

(१) जो लोग मिर्जापुरी या गोरखपुरी हिन्दी जानते हैं उनके लिये 'बीजक' का स्वाध्याय कुछ सुगम है परन्तु जिनको इन जिलों की भाषा से परिचित होने का अवसर नहीं मिला है उनके लिये उसका पढ़ना कुछ कठिन सा है। फिर भी हम नीचे कुछ वाक्य-बुलरी लिख देते हैं जिनके ध्यान रखने से यह कठिनाई आप ही आप दूर हो जायेगी और वह 'बीजक' पढ़ते समय घबरायेंगे नहीं।

गोरखपुरी या मिर्जापुरी भाषा (बोली)	साधारण हिन्दी
वा	उसे, उसको
ताहि	उसे, उसको
जाहि	जिसे जिसको
वाकर	उसको, उसे
ताकर	उसे, उसको
या का, या की, या के	इसको

गोरखपुरी या मिर्जापुरी भाषा (बोली)	साधारण हिन्दी
ताका, ताकी, ताके	उसकी
जाका, जाकी, जाके	जिसकी
याते, जाते	इससे, जिससे
ताते	उससे
यहि	इसको
तेहि	तिसको, जिसको
इन कर	इनका
तिन कर	उनका
तैं	तू
तोहि	तुझको
मोहि	मुझको
ओहि	उसको
तोंकहँ, तोकहाँ	तुझको
मोकहँ, मोकहाँ	मुझको
तेई	वही
ऊई	वही
ऊ	वह
ई	यह
जहिया	जब
तहिया	तब
बियाहल	व्याहा हुआ
बिआइल	बिआई हुई, जनी हुई, बच्चा वाली

गोरखपुरी या मिर्जापुरी भाषा (बोली)	साधारण हिन्दी
दीन, दीन्ह	दिया
लीन, लीन्ह	लिया
कीन, कीन्ह	किया
चीन, चीन्ह	चीन्हा, पहिचाना
आवा	आया
पावा	पाया
लावा	लाया
रहल	रहना
कहल	कहना
मूसल	मूस लिया, चोरीकिया
रहलीं	रहते थे, यारहेथे
करली	कहा, कह दिया
देहु	दी
देहू	दो
डारहु	डाल दो
जैं है	जायेगा
खै है	खायेगा
कहहिं	कहते हैं
का	क्या ?
काह	क्या ?
कहा	क्या ?

(२) फारसी और अरबी के शब्द जो बिगड़े हुये रूप में पाये जाते हैं। इनको पढ़ते समय ध्यान रखना चाहिये।

बीजक के शब्द	शुद्ध शब्द
आदग	वे दाग
उजू	वजू
असमान	आसमान
अँदेशा	अन्देशा
बाजी	बाजी
बिस्मिल	बिस्मिल्लाह,
फरमाया	फ़रमाया
भिस्त	बिहिश्त
दोजख	दोज़ख़
तुरक	तुर्क
जोलहा	जोलाहा
जिवह	ज़बह
रैयत	रअइअत (प्रजा)
हबीबी	हबीब (मित्र) पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहिब
सुन्ती	सुन्नत (मुसलमानी)
सेख	शेख
सेख तकी	शेख तकीं
सेख अकरदीं	शेख अकरदी
सेख सकरदी	शेख सकरदी
काजीं	काजी

बोजक के शब्द	शुद्ध शब्द
कुतुब	किताव (कुरान)
कुदरत	कुदरत
कसाई	कसाई
खसम	ख़सम (यह शब्द बीजक में मालिक और पति के लिये आया है चाहे यह उसका यथार्थ अर्थ न हो।
खबरि, खवर	खबर
कलिमा	कल्मा
खोदाय	खुदा
कुराना	कुरान शरीफ
गफलाई	गफलत
गुजारा	गुज़ारा
महति	मदहत (प्रशंसा)
मुलना	मोलाना, मौलवो
ममले	मसलें
मोकरवा	मक़बरा
मसखरी	मसखरी
मवासी	मवेसी
मसयद	मसजिद
मसाफा	मसहफ (कुरान)
निवाज, निमाज	निमाज
हजूर	हुजूर
हवाल	अहवाल या हाल

(३) कुछ शब्द जो पहिले प्रचलित थे अब उनका प्रयोग नहीं होता—(जहँड़ाना)= धोका खाना) (लबरी, ललराई, लबारी=झूठ) (नल, नर=मनुष्य) (सोनहा=खरहा) बिगोई=भूल गया, भ्रम में पड़ गया)

पंच कोष

नाम	स्थूल देह	सूक्ष्म देह	कारण देह	महा कारण देह	कैवल्य देह
कोष	अन्यमय कोष	प्राणमय कोष	मनोमय कोष	आनन्दमय कोष	विज्ञानमय कोष
आश्रम	ब्रह्मचर्य्य	गृहस्थ	वानप्रस्थ	सन्यास	परमहंस
चिन्ह	आचार	गुरुमय	जङ्गमआत्म लिङ्ग	शिव लिङ्ग	प्रासाद
प्रलय	नित्य	नैमित्य	विश्व	महा	एकान्त
दशा	बाल	पिशाच	उन्मत्त	मूक	जड़
अवस्था	जागृत	स्वप्न	सुषुप्ति	तुरिया	उन्मुनी
साधन	श्रवण	मनन	निदिध्यासन	साक्षात्कार	सहजारूप
मुक्ति	सालोक्य	सामीप्य	सारुप्य	सायुज्य	निर्गुण
अभिमान	विश्व	तेजस	पराग्य	प्रत्यगात्मा	जोवन मुक्ति निरंजन
दोक्षा	कोहं	ओहं	शिवोहं	सोहं	अनाम्योहं

नाम	स्थूल देह	सूक्ष्म देह	कारण देह	महा कारण देह	कैवल्य देह
आनन्द	विषय	योग	अद्वैत	विदेह	ब्रह्म
निर्णय	क्षर	अक्षर	क्षत्रज्ञ	आत्म	कूटस्थ
देवता	गणेश	मार्तण्ड	रुद्र	ईश्वर	निरंजन
शक्ति	क्रिया	द्रव्य	ज्ञान	इच्छा	परा
अग्नि	जठर	काम	मद	बड़वा (ज्ञान)	ब्रह्म
पाद गायत्री	प्रथम	द्वितीय	त्रितीय	चतुर्थ	ब्रह्म पद
बहिर मुद्रा	खेचरी	भूचरी	चाचरी	अगोचरी	उन्मुनी या सव्वसाक्षी
वाचा	वैखरी	मध्यमा	पश्यन्ति	परा	अनिर्वचनीं
मात्रा ओंकारकी	अकार	उकार	मकार	इकार (अर्ध मात्रा)	निकार (विन्दु)
गुण	रज	सत्व	तम	शुद्ध सत्व	निर्गुण
देवता	ब्रह्मा	विष्णु	रुद्र	ईश्वर	निरंजन
स्थान द्वार	नेत्र	कण्ठ	हृदय	मूर्द्धनी	शिखा
प्रमाण	साढ़े तीन हाथ का	अंगुष्ट	अर्द्ध अंगुष्ट	मसूर	प्रमाण हीन

नाम	स्थूल देह	सूक्ष्म देह	कारण देह	महा कारण देह	कैवल्य देह
ब्रह्म	तारक	दण्डक	कुण्डल्य	अर्द्ध चन्द्र	बिन्दु
स्थान चक्र	त्रिकुटी	श्री हट	गोल्हाट	ओट पीठ	भँवर गुफा
दिशा (मुख्य)	पूरब	पश्चिम	दक्षिण	उत्तर	ऊर्द्ध
दिशाके देवता	इन्द्र	वरुण	यम	कुबेर	ब्रह्मा
कर्म्म	सिर्जन	पालन	प्रलय	सूर्य्य	चन्द्र
शून्य	अर्द्ध	उर्द्ध	मध्य	सर्व्व	महा
वर्ण	पीत	श्वेत	लाल	हरा	काला
उच्चार	हस्व	दीर्घ	[बिना	उच्चार का	उच्चार]
वेद	ऋग	यजुर	अथर्व्व	साम	स्वसम बेद*
तत्व	पृथ्वी	जल	अग्नि	वायु	आकाश
उप दिशा	ईशान	निर्ऋति	अग्ने	वायव्य	अधो
उपदिशाओं के देवता	शिव	नैर्ऋत	अग्नै	वायु	विष्णु

* कबीर साहिब की शिक्षा स्वसम वेद कहलाती है।

नाम	स्थूल देह	सूक्ष्म देह	कारण देह	महा कारण देह	कैवल्य देह
बाजे	शङ्ख	मृगङ्ग	सारङ्गी	बाँसुरी	वीन
पिण्ड के वायु	अपान	प्राण	उदान	समान	व्यान
आकाश	घटाकाश	मटाकाश	महदाकाश	चिदाकाश	निजाकाश
कमल रङ्ग	पीत रक्त	श्यामरक्त	रक्त श्वेत	श्यामशुद्ध पीत	पीतश्वेत
मार्ग	पिपील	विहङ्ग	कपि	मीन	शेष
वेद रिचा	अद्व	वायम देव	सत पुरुष	ईशान्य कला	अधीर
कला	ऊर्म्मी	धूर्मी	ज्योति	ज्वाला	कलातीत
लोक	सत्य	बैकुण्ठ	कैलश	ज्वाला	निराधार
गुप्त मुद्रा	सन्मुखी	उन्मेलनी	शाँभवी	आत्मभावनी	पूर्ण बोधनी
उपबायु	क्रिङ्किरा	नाग	कूर्म्म	देवदत्त	धनञ्जय
विकार	अहं	मन मनत्त्व	बुधि बौधव्य	चित्चिन्तन	अन्तःकर्ण निर्विकल्प
भूमिका	क्षिपरा	गतागत	सुलेष्टता	सुलीन	अभाव
भाव	प्रधुंसा	पराग	अनम्य	अत्यन्ता	भावातीत
भोग	स्थूल	सूक्ष्म	आनन्द	आनन्द भास ईश्वर रूप	ब्रह्म मय

सत्त नाम

सत् कबीर का बीजक

प्रथम भाग रमैनी

पहिली रमैनी [१]

[बीजक]

१. जीव रूप यक अन्तर बासा ।
अन्तर ज्योती कीन्ह प्रकासा ॥ १ ॥

२. इच्छा रूप नारि अवतरी[१] ।
तासु नाम गायत्री धरी ॥ २ ॥

३. तेहि नारी के पुत्र तीन भयऊ[२] ।
ब्रह्मा विष्णु महेश नाम धरेऊ ॥ ३ ॥

४. तब ब्रह्मा पूछत महतारी ।
को तोर पुरुष केकरि तुम नारी ॥ ४ ॥

नोटः—१=उत्पन्न हुई । २=उत्पन्न हुये ।

५, तुम हम हम तुम और न कोई।
तुम मोर पुर्ष हमीं तोर जोई ॥ ५ ॥

साखी

बाप पूत की एकै नारी, एकै माय बिआय[2]।
ऐसा पूत सपूत न देख्यो, जो बापहि चीन्है धाय ॥

उल्था

(१) अन्तर में एक जीव रूप बसता था। अन्तर ही में ज्योति ने प्रकाश किया। (२) इच्छा रूपी स्त्री प्रगट हुई जिसका नाम गायत्री पड़ा। (३) उस स्त्री के तीन पुत्र ब्रह्मा, बिष्णु, महेश के नाम से उत्पन्न हुए (४) तब ब्रह्मा ने माँ से पूछा, "तेरा पुरुष कौन है? और तू किसकी स्त्री है?" (५) वह (बोली) "हमारे और तुम्हारे अतिरिक्त कोई और नहीं है। तुम हमारे पुरुष हो और हम तुम्हारी स्त्री हैं।" (साखी) बाप और बेटे की एक ही जोरू है। एक ही मां से सब उत्पन्न हुए कोई ऐसा सपूत पुत्र नहीं देख पड़ता जो बाप को पहिचाने।

आदि में कोई एक तत्व (बीज) रूप अपने ही अन्दर उन्मुनी अवस्था में था। उसमें छोभ हुई और ज्योति ने अन्दर ही अन्दर प्रकाश किया। उसी में वासना रूप स्त्री (माया) प्रगट हुई जिसका नाम गायत्री है और इसी के तीन मुख वाले रूप से तीन पुत्र ब्रह्मा, विष्णु और महेश उत्पन्न हुए। ब्रह्मा रज है। विष्णु सत् है और महेश तम है। प्रश्नोत्तर न सत् में होते हैं न तम में होते हैं क्योंकि इन दोनों में क्रिया नहीं है। क्रिया केवल रजोगुण में है। इसलिये रजोगुणी ब्रह्मा ने उत्पन्न होते ही माया से पूछा, "कौन तेरा पति है जिस की तू स्त्री है? माया ने उत्तर दिया, "हमारे तुम्हारे अतिरिक्त और कोई तीसरा नहीं है। तुम पुरुष हो और मैं तुम्हारी स्त्री हूं।" (साखी) वास्तव में बाप और बेटे की माया एक ही है और इसी

१ = स्त्री, जोरू। २ = उत्पन्न करे।

माया से सारा जगत् उत्पन्न हुआ है फिर भी कोई योग्य पुत्र नहीं दिखलाई देता जो यह जाने कि पिता कौन है। सब इसी माया के भ्रम में भूले हुए है। इसकी विशेष व्याख्या दूसरी रमैनी में की गई है।

प्रेम

ले० दुर्गादास 'चमन'

प्रेम प्रेम सब कोई कहे प्रेम न जाने कोइ,
प्रेम न जाने कोइ प्रेम मीरा ने पाया।
जहर हुआ प्रशाद प्रेम में उदर समाया,
शेष नाग ने प्रेम से है सब भार उठाया।
देखो धन्ना जाट प्रभु पत्थर में पाया,
प्रेम करो सत पुरुष से जो होना होय।
प्रेम प्रेम सब कोई कहे प्रेम न जाने कोइ।

धन्यवाद

मनुष्य बनो की सहायतार्थ श्री सोमदत्त त्यागी सहारनपुर ने १०) श्री जी०सी० अग्रवाल अम्बिकापुर ने अपने बच्चे के जन्म दिवस पर ५१) रु० एवं श्री छोटूराम जी बस्ती ने १०) रु० भेजे हैं हम सभी भाइयों के अत्यन्त आभारी हैं एवं गुरू से उनको समृद्धी एवं शान्ती की कामना करते हैं।

प्रकाशक

आवश्यकता है

एक कर्मनिष्ठ, निर्बन्ध कर्मचारी जो शिव समाधि राधास्वामी धाम में स्थाई रूप से रहे और समाधि की सेवा सफाई, सत्संग पाठ एवं चिराग बत्ती आदि भक्ती भाव से करे। वेतन १५०) प्रति माह।

सचिव

* सतसंग *

मानवता मन्दिर होशियार, २२-११-७७

शब्द पढ़ा गया—

मंगलम गुरुदेव मूरती, मंगलम पद पंकजम ।
मंगलम अव्यक्त अनुपम, मंगलम भव गंजनम ।
मंगलम धुरपद निवासी, मंगलम सत् आसनम ।
मंगलम निर्वाण सदगते, मंगलम जन रंजनम ।
मंगलम ज्ञान स्वरूपम, मंगलम आनन्द रूपं ।
मंगलम चैतन्य सदनम, मंगलम सत सत्य रूपं ।
मंगलम योगिनं माया नीत, मंगलम दायकम ।
मंगलम गम गुन रहित, अपरोक्ष परोक्ष निवासनम ।
मंगलम गमकास ज्ञाता, मंगलम भव नारानम् ।
आदि कारण मूल कारण, मध्य आदि अनन्त हो ।
मंगलम करुणा सदन, शुभ ताव परम जगत प्रभो ।
आप प्रगटे इस जगत में, जीव काज सुधारने ।
शब्द नाव बनाम सुन्दर, जीव दुखिण उभारने ।
शब्द तन मन कर्म वाणी, सब ही अर्पण लीजिये ।
मैं हूं शरणागत तुम्हारा, दास अपना कीजिये ।
राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी जय सदा ।
त्याग जग के महा फंदे, पाऊं भक्ति संपदा ।

राधास्वामी !

मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा । राम कृष्ण को अवतार समझ कर पूजते थे । राधास्वामी मत वालों ने कृष्ण, राम तथा ऋषियों को किसी को भी काल व माया से मुक्त नहीं बताया और अपने मत को सबसे ऊँचा बताया है । जैसा इस शब्द में भी बताया गया है ।

यदि संत मत की कोई महानता है तो वह यह शब्द योग बताता है।

कल मैंने साधु आश्रम से छपी तथा श्री सतराम बी० ए० द्वारा लिखी गई (आवागमन की पहेली) किताब, पढ़ी। इस किताब में बतलाया गया है कि आवागमन सत्य है और इसे कई सच्ची घटनाओं से सिद्ध किया गया है। जो लोग मरकर जन्में तथा जिन्होंने अपने पूर्व जन्म के सच्चे वृतान्त इस जन्म में देश विदेश में बताये इस किताब में लिखे हैं। मेरे मस्तक पर पुस्तक का बड़ा प्रभाव पड़ा किन्तु इस किताब में एक कहानी एक बूढ़ी औरत की है। उसे साधारण बुखार था। उसने रात को बारह बजे अपने लड़के से कहा कि मैं अब मर जाऊँगी। उसकी बात का उसके लड़के को विश्वास नहीं आया तो उसने लड़के को कहा कि तेरा पिता मुझे लेने आया है। यह बात उस बूढ़ी महिला ने कही। मैं नहीं मानता क्योंकि कई कहानियाँ मेरे बारे में भी प्रचलित हैं कि मरने वालों को मैं लेने गया किन्तु मैं तो जाता नहीं। क्योंकि मैं नहीं जाता इसलिये उस बूढ़ी स्त्री का पति भी उसे लेने को नहीं गया। यह उस बूढ़ी का संस्कार ही था। मैं रात को सोचता रहा। क्या कोई उपाय है जन्म मरण से बचने का ?

जब तक हमारा मरते समय संबन्ध मानसिक रूप से किसी भाई, पुत्र माया या गुरू से या गुरु के आश्रम से भी है जन्म मरण से हम बच नहीं सकते। विज्ञान के सिद्धान्त से भी यही सिद्ध हुआ है और मैं कहता हूँ कि वासनाओं के कारण आत्मा पर भार आता है और यह भार जन्म लेने का कारण बनता है। वह भार आत्मा को ऊपर नहीं जाने देता। यह प्रेम भी बंधन है। बाबा सावन सिंह जी महाराज कहा करते थे। जो हरद्वार से प्रेम करेंगे वे हरिद्वार की मछलियाँ बनेंगे। इसी प्रकार मैं कहता हूं जो होशियारपुर से प्रेम करेंगे वे होशियारपुर में जन्मेंगे संतमत की वाणी में राय सालिग

राम साहिब ने भी कहा है कि अन्त समय में फिल्म चलती है। इसलिये सिद्ध हुआ कि किसी न प्रेम भी आवागमन का कारण होता है।

मैं जो कुछ कह रहा हूं आप लोगों को नहीं अपनी आत्मा को कह रहा हूं। मैं राम कृष्ण और दातादयाल जी महाराज को प्रेम करता रहा हूं उनके ध्यान में मस्त रहता था। अब लोग मेरा ध्यान करते हैं। जो ध्यान करते हुये मरते है उनका भी आवागमन होगा। आवागमन से बचने का मार्ग है शब्द का साधन जिसे शब्दयोग कहा गया है। मरने के पहले यदि मरने वाले भी सुरत शब्द में लीन रहे तो ही आवागमन से बच सकते हैं। यदि यह सचाई न होती तो मैं इस संतमत को जिसमें राम, कृष्ण, वशिष्ठ आदि सभी का खंडन है इसे कभी न मानता। मेरा दाता पर तो विश्वास था उन्हें मैं छोड़ नहीं सकता था। उस विश्वास द्वारा समय आने पर मुझे यह समझ आई और यह सत्य है। यदि मैं मन्दिर से, दाता की देह से, या राधास्वामी मत से भी बँधा रहूँगा तो में प्यार या ध्यान में फँसा रहूँगा और आवागमन से बच न सकूंगा।

जिस गुरु की शब्द में प्रशंसा की गई है। वह गुरु इस अवस्था में रहता है। सबसे मुक्त (un attached) है। वह लोग गुरू नहीं जो लोगों को अपने पीछे लगाते हैं। चेले बनाते हैं चेलों का धन ठगते हैं। यह सब पाखण्ड है। मैं उनकी भी निन्दा नहीं करता क्योंकि वे जानते ही नहीं कि सचाई क्या है ? गुरुओं के पास जाने वाले भी तो धन सन्तान व साँसारिक वासनाओं के लिये ही जाते हैं। परमार्थ के लिये कौन जाता है।

आप प्रगटे इस जगत में जीव काज सुधारने।
शब्द नाव बनाय सुन्दर, जीव दुखित उवारने ॥

जब से यह पुस्तक पढ़ी सोचता रहा हूं जब ध्यान आता है जन्म

होते हैं तो मेरी आत्मा काँपती है। मैंने गुरु बनके देखा, चेला भी बनके देखा। सच्चा गुरु शब्द ही है, शब्द ही चेला है। न मैं अपना अनुभव कहने का प्रण करता न मैं यह काम करता न मन्दिर बनाता मैं फँस गया हूँ, मैं दुखी हूँ। किसी ने बेटे पोते के लिये बाग बनाया, किसी ने चेलों के लिये मन्दिर या डेरा बनाया, बताओ दोनों में क्या अन्तर है। मेरा यह कर्म है और इसमें मैं समझता हूं मेरा वश नहीं। किसी के साथ दोस्ती (Attachment) न रहे यह जरूरी है। गुरु से भी प्रेम पार नहीं जाने देगा। क्या पता आपको यह संसार अच्छा लगता हो। मेरी दृष्टी में यह दुनियाँ दुख की खान है।

राधास्वामी।

—०—

सतसंग

मानवता मन्दिर होशियारपुर, ता० २८-११-७७

संत कबीर का शब्द पढ़ा गया —

भाई कोई सद्गुरु संत कहावै। नैनन अलख लखावै।
डोलत डिगे न बोलत बिसरे जब उपदेस द्रढ़ा दै।
प्राण पूज्य किरियाते न्यारा सहज समाधी सिखावै।
द्वार न रूँधे पवन न रोके नहीं अनहद समझावै।
यह मन जाय जहँ लग जब हों परमातम दरसावै।
करम करे निः करम रहै जो ऐसी जुगत लखावै।
सदा विलास जास नहीं मनमें भोग में जोग जगावै।

सुना सिर पर के सार सिलावर आसन अन्दर जमावै।
भीतर रहा सो बाहर देखे दूजे दृष्टी न आवै।
कहत कबीर बसा है हंसा आवागमन भ्रमरावै॥

मैंने संत कबीर का यह शब्द सुना। मेरी नियत सचाई पसंद है। विचार आया कि मैं भी अपने को स्वयं को सतगुरू कहता हूँ। कबीर तो कहता है कि वह संत सदगुरू हो सकता है जो अलख को लखादे। यह है कबीर की परिभाषा संत सद्गुरू की।

भाई कोई सद्गुरू संत कहावें। नैनन अलख लखावै।
डोलत डिगै न बोलत बिसरै। जब उपदेस द्रढ़ावै।
प्राण पूज्य किरियाते न्यारा सहज समाधि सिखावै।

आंखों से अलख को दिखाने वाला ही सदगुरू है। ऐसी सन्तों की वाणियों ने सारी आयु मुझे खोज करने को विवश किया। काश ! सन्त कबीर होता तो मैं उनसे पूछता कि कैसे अलख लखाया जाता है ? यदि वो होता तो उत्तर देता कोई और महात्मा जो गुरू बने हुये हैं वे ही बताते। मैंने क्या समझा ? जब से मुझे यह पता लगा कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता हूँ, जो जाता है वह मैं नहीं होता हूँ। साधन करते समय जो वस्तु प्रकाश को देखती व शब्द को सुनती है वो है किन्तु दिखाई नहीं देती वह अलख है। ऐ मानव ! तू किस खुदा या राम को ढूंढ़ता है। राम या खुदा है किन्तु उसे कोई देख नहीं सकता। मैं इस वाणी का यही भाव समझा हूँ।

भाई कोई सतगुरु सन्त कहावै।
डोलत डिगे न बोलत बिसरै जब उपदेस द्रढ़ावै।

ऐ संतों ! ऐ कबीर !! तुम्हारी वाणियों ने मुझे सारी आयु खोज करने को विवश किया। मैंने प्रण किया था कि जो मुझे अनुभव होगा कह जाऊँगा। मेरी आयु इसी खोज में गुजरी है। कबीर कहते हैं—

डोलत डिगै न बोलत बिसरै जब उपदेस द्रढ़ावै।
प्राण पूज्य किरिया से न्यारा सहज समाधि सिखावै।

मैं अब कैसे डोलूँगा अब जब मुझे पूरा पूरा विश्वास हो गया है कि सचाई यह नहीं यह है। कबीर का तो पता नहीं उसे क्या विश्वास हुआ था? मैं समझा हूँ कि एक तत्व है, उसमें हरकत आती हैं— बुलबुला बन जाता है बनकर मिटकर उसी में समा जाता है। इस अनुभव के आधार पर ही कहता हूं जो कहता हूँ वह मेरा निश्चय है। देख देखकर कि वह अवस्था अलख अगम और अनामी है—हम सभी उसका अंश हैं— यही मैं समझा हूँ। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि तूने क्या किया संत सद्गुरू अपने को कह करें? मेरे कर्म मैंने भोगे और क्या करना था? सद्गुरू की ड्यूटी मैं करता हूँ।

करम करै निः करम रहै जो ऐसी जुगत लखावै।
सदा विलास गास नहीं मनमें भोग में जोग जगावै।
प्राण पूज्य किरिया से न्यारा, सहज समाधि सिखावै।

जो मैं कहल कहता हूँ यह मैंने समझा है। सन्त कबीर ने, दातादयाल जी ने या स्वामी जी ने क्या समझा मुझे पता नहीं। मैंने समझा है मेरी जो हस्ती है उसे ढूढ़ने निकली थी पहले रूप देखा करता था वह तो सिद्ध हो गया कि माया का है, कल्पित है रूप धूर गया, आगे गया वहाँ प्रकाश और शब्द है। अब उसे ढूढ़ता हूँ जो प्रकाश को देखती व शब्द को सुनती है वह है अनामी-अलख या अगम इस निश्चय से मैं अब डोलता नहीं व यही सार बताता है। कबीर भी यही कहता है।

धरती त्यागी अकासहु त्यागै अधर पढ़ै या ध्यावै।
सुन्न सिखर के सार सिला पर आसन अचल जमावै।

और कहा है—

द्वार न रूँधे पवन न रोकै, नहीं अनहद अरुझावै।
यह मन जाय जहाँ लग जब ही परमातम दरसावै।

सद्गुरू वह है जो नाम, शब्द या अनहद में भी नहीं उलझाता मैं वहाँ पहुंच जाता हूँ जहाँ शब्द, प्रकाश, रूप कुछ नहीं होता है। मैंने क्या किया है जीवन में ? इन वाणियों ने मुझे पागल बनाया था माना इसी ज्ञान के कि मेरा रूप लोगों के काम करता है और वास्तव में मैं नहीं जाता। मेरी खोज को सहायता मिली।

यह मन जाय जहां लग जब हीं परमातम दरसावै।
करम करै निः करम रहै जो ऐसी जुगत लखावै।
सदा विलास तास नहिं मनमें भोग में जोग जगावै।
धरती त्यागी अकासहु त्यागै अधर मढ़ैया छावै।

अब मैंने एक सज्जन के पत्र का उत्तर चार पेज में दिया उसमें यही कहा कि उस तत्व का किसी को अन्त नहीं मिला जो कुछ हो रहा है प्रकृति का खेल है, जिसको यह ज्ञान हो जाता है वही सद्गुरू की ड्यूटी पूरी करता है। इस ज्ञान के आधार से वह सद्गुरू कर्म तो करता है किन्तु वह यह जानता है कि कोई ताकत सब करवा रही है। कर्म करते हुए भी वह कुछ नहीं करता। सब उसका ही खेल है अपना कुछ भी नहीं तो बेफिक्री, बेगमो, प्रसन्नता ही रहती है।

सदा विलास गास नहीं मनमें भोग में जोग जगावै।
धरती त्यागी आकासहु त्यागै अमर मढ़ैया छावै।
सुन्न सिखर के सार सिला पर आसन अचल जमावै।
भीतर रहा सो बाहर देखे दया दृष्टि नहीं आवै।

इस बाणी का भाव मैंने अनुभव किया है। मान को भूल जाना, देह को भूल जाना, वह है अलख, उस अवस्था में मन नहीं होता अभी समाधी अवस्था में मैं कहाँ था ? अलख ही में तो था। किन्तु वहाँ मुझसे अभी रहाँ नहीं जाता वापिस आना पड़ता है। यह मेरे

में कमी है। इसमें मेरा वश नहीं—

भीतर रहा सो बाहर देखे दूजा द्रष्टी न आवै।
कहत कबीर फंसा है हंसा आवागमन मिटावै।

भाई कोई सद्गुरू सन्त कहावै।
ऐसे ज्ञान वाला चिंता नहीं करता घबराता नहीं।

आवागमन के माने कबीर ने क्या समझे मुझे पता नहीं। मैं यह समझता हूं कि मेरा मन जो ढूढ़ता था वह तड़क समाप्त हो गई उसका समाप्त होना मेरा आवागमन समाप्त होना मानता हूँ। इन वाणियों ने मुझे बर्बाद किया या आबाद किया मुझे पता नहीं। जो भाव मैंने इस वाणी का समझा अनुभव भी किया वह आपको कह दिया। मेरी समझ ठीक है या नहीं इसका मुझे पता नहीं। क्या पता मैं गलत होऊं ?

सबको राधास्वामी

—••—

निर्वाण वृक्ष

ले० दुर्गादास 'चमन'

इक देखा वृक्ष अनौखा जड़ ऊपर तना है नीचे को।
पात पात में अद्भुत माया सारा जग भरमाया।
तना वृक्ष की जड़ को खाए कोई समझ न पाया।
नीचे आकर हमने देखा चोट तने को व्यापे।
काट काट के सार समाप्त, मोह ममता के व्यापे।
इक देखा वृक्ष अनोखा जड़ ऊपर तना है नीचे को।

एक अचम्भा और भी देखा वृक्ष में सृष्टि सारी ।
सूर्य चान्द हजारों तारे भई सुरत मतवारी ॥
यही पुरुष है किसी जगह और बना कहीं पर नारी ।
सपष्ट भाव से क्या समझाऊँ माया सब सँसारी ।
इक देखा बृक्ष अनौखा जड़ ऊपर तना है नीचे को ।
इसी बृक्ष में सार भरा है समझ के साज संजाओ ।
नाम दान ले परम पुरुष से अपना काम बनाओ ।
सतसङ्ग करो समझकर दृष्टि शिव नेत्र पर लाओ ।
पात की इक इक नस से राधास्वामी गाओ ।
इक देखा बृक्ष अनौखा जड़ ऊपर तना है नीचे को ।

—००—

साध का अंग

कबीर संगत साध की, हरै और की व्याध ।
संगत बुरी असाध की, आठहु पहर उपाध ॥
निर्बैरी निःकामना, स्वामी सेती नेह ।
विषयों से न्यारा रहै, साधु का मत एह ॥
सिंघों के लेंहड़े नहीं, हंसों की नहि पाँत ।
लालों की नहि बोरियां, साधु न चलें जमाँत ॥
सिंह साध का एक मत, जीवत ही को खाय ।
भाव हीन मृतक दशा, ताके निकट न जांय ॥
रवि को तेज घटै नहीं, जो घन जुड़ें घमण्ड ।
साध वचन पलटै नहीं, पलट जाय ब्रह्मण्ड ॥
साध कहावन कठिन है, ज्यों खाड़े की धार ।
डिगमगे तो गिर पड़े, निश्चल उतरे पार ॥

परमदयाल जी, महाराज के साथ जाने वाले तीन साथियों की समय सारणी

स्थान	दिनांक	समय	गाड़ी नं०	स्थान	समय	दिनांक
होशियारपुर से	३०-१-७८ को	१६-४० P.M.	३४, Down कश्मीर मेल	दिल्ली	५-०० A.M.	३१-१-७८
दिल्ली से	३१-१-७८ को	१२-४०	१५, up चेतकएक्सप्रेस	भीलबाड़ा	३-४० A.M.	१-२-७८
भीलवाड़ा से	३-२-७८ को	२२-५७	१६ D. चेतक एक्सप्रेस	अलबर	१०-१३ A.M.	४-२-७८
अलबर से	६-२-७८ को	१०-२०	Do	दिल्ली	१४-०५ P.M.	६-२-७८
नई दिल्ली से	६-२-७८ को	१६-३० P.M.	१६ D. जी. टी. एक्सप्रेस	काजीपेट	२१-०५ P.M.	१०-२-७८
सिकन्दराबाद से	१८-२-७८ को	२०-५५ P.M.	३२D. बम्बई एक्सप्रेस	बम्बई बी.टी.	१३-५० P.M.	१६-२-७८
बम्बई से	२६-२-७८ को	६-४० A.M.	२७ up दादर वाराणसी एक्सप्रेस	कटनी	२-३५ A.M.	२७-२-७८
कटनी से	३-३-७८ को	२२-२५	२८ D. दादर वाराणसी एक्सप्रेस	इटारसी	४-५५ A.M.	३-३-७८
इटारसी से	५-३-७८ को	१४-०० P.M.	५७ up अमृतसर एक्सप्रेस	भूपाल	१५-३८	५-३-७८
भूपाल से	७-३-७८ को	६-३० A.M.	३४ Down	उज्जैन	१०-५७ A.M.	७-३-७८
इन्दौर से	१०-३-७८ को	१६-५० P.M.	७२ D. २३ up जनता एक्सप्रेस वाया रतलाम	दिल्ली	१२-२५ P.M.	११-३-७८
दिल्ली से	१७-३-७८ को	२०-५० पर	३३ up काशमीर मेल	होशियार	६-२५ A.M.	१८-३-७८

परमदयाल फकीरचन्द जी कृत हिन्दी पुस्तकें

दयाल फकीर की जीवनी	३)५०
ाव धर्म प्रकाश भाग १	)७५
व धर्म प्रकाश भाग २	
दुर्गादास कृत)	१)
ागवन उर्फ जीवन रहस्य	१)५०
र का सार भाग १ व २	५)
ड़ पुराण रहस्य	१)७५
न्त सत्गुरु वक्त	१)५०
ागम वाणी भाग १, २, ३	३)
सतपः	)५०
बारहमासा की व्याख्या	२)५०
रत शब्द योग	१)
निर्वाण से परे	१)
बेहद्दी या अपार के परे	१)२५
र दर्शन	१)२५
धार्मिक खोज	१)२५
महिमा	१)
गुरु वन्दना	)७५
अजायव पुरुष	१)
र तत्व सचाई और शान्ति	१)
ादि अन्त	१)२५
पांच म की व्याख्या	१)५०
सत ज्ञान दाता भाग १ व २	२)
म दान	१)
त घर की खोज	१)
म विकास	१)
ीता	

अनुभव ज्ञान प्रकाश	१)
ज्ञान योग	१)

अन्य धार्मिक पुस्तकें

सत सनातन धर्म या सत मानव धर्म	३)
जगत कल्याण	)७५
विश्व धर्म भाग १ व २ व ३	१)७५
फकीर बचनामृत	)५०
कर्म भोग या मौज भाग १व२	१)७५
राधास्वामी शताब्दी पर मेरी भेट भाग १ व २	२)५०
जगत निस्तार	१)२५
जगत उभार	१)
मानव कल्याण भाग १, २. ३, ४, ५	६)
अदभुत मोती	१)
५० वर्षीय फकीर अनुभव	)७५
मेरा ८३ वर्षीय अनुभव	१)२
मानवता युग धर्म	८)०५
आकाशी रचना	)५०
आजादी कीं कुंजी	)७५
शिव फकीर पत्रावलीं	१)५०
हृदय उद्गार	१)
कबीर सार शब्द व्याख्या	१)
रचना का भेद	)७५
नव विवाहितों को उपदेश	)२५
उन्नति मार्ग	)५०
गूढ़ रहस्य व्याख्या	२)५०
फकीर प्रवचन	)७५
सार भेद	)२५

Regd. No. L-ALG—28

पुस्तकें

हमारे यहां

महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज

कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक,
स्त्री उपयोगी,
स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी
पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती'
सिलसिले के उपन्यास तथा
परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज
कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें
मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।

डाक खर्च सब का अलग है।

पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से
भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—

कार्यालय

मनुष्य बनो

शिव भवन, लेखराजनगर,
अलीगढ़ (उ० प्र०)

ग्राहक सं०————

श्री

सम्पादक— प्रभुदयाल मीतल

व्यवस्थापक व प्रकाशक—
श्रीमती सुधा मीतल,
शिव भवन, लेखराज नगर
अलीगढ़।